Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-12, Issue-2, September-2018

उत्तराखण्ड की थारू एवं बोक्सा जनजाति में परम्परागत चिकित्सा (तन्त्र–मन्त्र) व्यवस्थाः एक अध्ययन

डा0 दीपक कुमार
असि0 प्रोफेसर (इतिहास विभाग) बी0एस0एम0 पी0जी0 कालेज, रूड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड
मो0–9720770574 email-deepakdobhalrke@gmail.com

सार (Abstract) – बोक्सा एवं थारू जनजाति उत्तराखण्ड के नैनीताल, ऊधमसिंहनगर एवं देहरादून में प्रारम्भ से ही निवास करती है। इनके निवास क्षेत्र को क्रमशः बोक्साड़ एवं थरूवाट नाम से जाना जाता है। प्रारम्भ से ये जनजातियाँ तराई क्षेत्रों में विषम भौगोलिक परिस्थितियों में जीवन यापन करती आयी है। ये जंगलों एवं नदी–नालों के समीप बसे होने के कारण प्रकृति की आलौकिक शक्तियों पर विश्वास रखती है। इन अदृश्य शक्तियों के प्रकोप से बचने के लिए इनके प्रति आस्था आत्मपूजन, तन्त्र–मन्त्र एवं जादू–टोना आदि क्रियाकलापों का सहारा लेने लगे। उनका विश्वास रहा है कि इन अदृश्यों शक्तियों के पूजन से रोग एवं बीमारियाँ दूर हो जाती है। यह परम्परागत चिकित्सा प्रणाली इन जनजातियों की एक अलग पहचान बनाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन जनजातियों की परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों का विस्तृत उल्लेख किया गया है।

सार शब्द (Keywords)– भरारे, गनात, थरूवाट, बोक्साड़, आत्मपूजन, सयाना, तन्त्र–मन्त्र आदि।

प्रस्तावना (Introduction)– बोक्साओं में आलौकिक एवं अदृश्य शक्तियों के प्रति आस्था एवं विश्वास उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में विशेष रूप से परिलक्षित होता है। ये वनों एवं प्रकृति के अतिनिकट होनें से प्रकृति पूजन एवं आत्म पूजक समुदाय माना जाता है। इनका मानना है कि मानव आत्मा का मृत्यु के बाद भी अस्तित्व बना रहता है। देवी–देवताओं की आत्माएँ भी प्रबल होती है जो कि हमारे जीवन की गतिविधियों को निर्धारित एवं निर्देशित करती रहती हैं। मनुष्य इन आत्माओं के कुप्रभावों से बचने के लिए उनके प्रति आस्था के भाव जागृत करके उनकी पूजा अर्चना करके उन्हे प्रसन्न रखता है। बोक्साओं के गाँव के निकट आम या पीपल वृक्ष के नीचे ग्राम रक्षक देवी 'खेड़ी देवी' का थान (स्थान) बना होता है। बोक्साओं की मान्यता है यह ग्राम देवी हमारे खेतों में फसल एवं पशुओं की रक्षा करती है।

बुक्साड़ क्षेत्र में सांकरिया देवता जिसे पशुओं का रक्षक देवता माना जाता है। सांकरिया देवता की स्थापना गाँव से दूर जंगल में पेड़ों के बीच ''देवता का प्रतीक लोहे से बनी सांगल'' किसी पेड़ पर ठोक दी जाती है। मान्यतानुसार सांकरिया देवता हमारे पशुओं की जंगल में चुगते समय बाघ व अन्य जंगली जानवरों एवं बीमारियों के प्रकोप से बचाता है। देवता को प्रसन्न करने के लिए वर्ष में एक बार सुअर या मुर्गे के बलि चढाई जाती है। इस मांस को सभी बुक्सा परिवार आपस में बाँटकर खाते हैं। गाँवों में स्थित देवी भवानी तथा काली माता के मन्दिर में भी विशेष पर्वों पर बकरे तथा मुर्गे की बलि चढ़ाई जाती है। उनकी मान्यता है कि ऐसा करने से हमारा जीवन स्वस्थ एवं सुखी रहता है।[1]

बोक्सा समाज आत्मपूजक समाज रहा है। रामनगर, काशीपुर एवं बाजपुर के बोक्सा अपने पूर्वजों की आत्मा का पूजन करते हैं। इनमें मनीराम ठेकेदार, कोधन पद्यान, डलपुरिया एवं बुक्सारों पधान प्रमुख है। इन पूर्वजों की आत्मा को आज भी पूजा जाता है। इन्होंने अपनी तान्त्रिक सिद्धियों द्वारा बोक्साओं के हितार्थ कार्य किये थे। इसी आस्था एवं विश्वास के साथ आज भी लोग इनके मन्दिर में जाकर मनौती मांगते हैं, जो कि अवश्य ही पूर्ण होती है। मन्नत पूरी हो जाने पर बोक्सा लोग इनकी आत्मा को पूजते हैं। तत्रं–मंत्र विद्या में पारंगत व्यक्ति को 'भरारे' कहा जाता है। भरारे द्वारा तंत्र–मंत्र या जादू–टोना जनहित के कार्य किये जाते हैं। जब कोई व्यक्ति बुखार, पेट दर्द, पीलिया, ज्वर, सर्पदंश या बिच्छू दंश व प्रेतआत्माओं के प्रकोप से घिर जाता है तो भरारे या भकत द्वारा अपनी तान्त्रिक विद्याओं द्वारा इन समस्त व्याधियों को दूर करने का कार्य किया जाता है। बोक्साओं की मान्यता है कि भरारे अपनी तंत्र विद्या में पारंगत होते हैं। जिससे बीमार व्यक्ति एकदम ठीक हो जाता है।[2] प्राचीन समय से ही बोक्सा जादूई विद्या का प्रचलन बोक्सा समाज पर रहा है। आज भी जो लोग तंत्र–मंत्र पर आस्था व अटूट विश्वास रखते हैं उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

पशुओं की गला घोंटू, खुरपका, मोतीझरा, अफारा आदि बीमारियों को भी तन्त्र–मंत्र से ठीक किया जाता है। खेतों में खड़ी फसल को तंत्र–मंत्र के द्वारा पक्षियों एवं पशुओं से होने वाले नुकसान से भी बचाया जाता है। वर्तमान में बोक्साओं का कहना है कि नये सामाजिक एवं वैज्ञानिक विकास के चलते हुए लोगों में जादू–टोने एवं तंत्र–मंत्र के प्रति आस्था एवं विश्वास घटता चला जा रहा है। आज रोगी व्यक्ति को अस्पताल में उपचार के लिए ले जाया जाता हैं पहले तो जब अस्पताल सुविधाएँ नहीं थी तो तंत्र–मंत्र से ही रोगी को रोग मुक्त किया जाता था।

बोक्सा लोग भूतप्रेत, बुरी आत्माओं के अच्छे जानकार होते हैं। इस विद्या में पारंगत व्यक्ति को 'सयाना' कहते हैं। सयाना वशीकरण, सम्मोहन विद्या से भूत–प्रेत एवं बुरी दृष्टि को तंत्र–मंत्र, तावीज, गण्डा तैयार करके दूर कर देता है। सयाने को सूफी, फकीरों, सन्तो के द्वारा सिद्धी प्राप्त होती है। एक प्रसिद्ध सयाना–प्रेम सिंह, निवासी गदरपुर (उधमसिंह नगर) से सम्पर्क करने पर मंत्र प्राप्त किया जो इस प्रकार हैः–

खुर्द मौजे हस्ती, मक्के महीने की बस्ती
खुदा की खुदाई मानकर, मौहम्मद की बादशाही को मानकर।
फातमा बीवी को मानकर, दुलदुल घोड़े को मानकर,
लहर तेरी जस तेरा, चले–चले कौन चले।
दरिया माँ तीस ख्वाजा चले, मंत्रों के परिणाम चले।
मेरे गुरू का वचन साचा, देखे दुनिया तेरा तमाशा।[3]

यह मंत्र रोगों को भगाने, प्रेत आत्मा को शान्त करने में प्रयुक्त किया जाता है। वर्तमान में बोक्साओं में शिक्षा के विकास के साथ बाह्य समाज के सम्पर्क में आने से तंत्र–मंत्र एवं जादू–टोने जैसी दुष्प्रभावी विद्याएँ विलुप्त हो चुकी हैं। लेकिन बुजुर्ग एवं पुरानी रूढ़िवादी अंधविश्वासी मान्यताओं से जुड़े कुछ ही बोक्साओं को तंत्र–मंत्र, जादू–टोना पर विश्वास कायम है। वे इन मंत्रों का प्रयोग बीमारी के प्रकोप से बचने, शत्रु से बदला लेनें, पशुओं को बीमारी से बचाव के लिए किया करते हैं। सभी धार्मिक कृत्यों को सम्पन्न करने में भी 'भरारे' को विशेष सम्मान प्राप्त है। अतः आज भी समाज में पुरोहित या ज्योतिषी की तरह 'भरारे' को विशेष महत्व दिया जाता है। :भरारे' आज भी पुरोहित या ज्योतिषी की तरह मानव के जीवन में घटित घटनाओं या भविष्य में घटने वाली घटनाओं के बारे में पहले सूचित करने की क्षमता रखता है। बुक्साड़ क्षेत्र के सभी धार्मिक कार्यों को कराने के लिए 'भरारे' को आमंत्रित किया जाता है। 'भरारे' के आदेशानुसार ही आज भी बोक्सा समुदाय में जन्म संस्कार से लेकर मृत्यु संस्कार तक के समस्त धार्मिक क्रियाकलापों को सम्पन्न किया जाता है।

बोक्साओं की तरह थारू समाज प्रकृति की आलौकिक शक्तियों पर विश्वास करता है। उनके प्रति विशेष आस्था एवं विश्वास के साथ उनकी पूजा–अर्चना विभिन्न तरीकों से करता है। इनके अपने ईष्ट देवी–देवता होते हैं। गाँव में स्थित पीपल या वट वृक्ष के नीचे देवी–देवता का मन्दिर या थान बना होता है। विशेष पर्वो पर इन देवी–देवताओं की पूजा वन्दना का आयोजन किया जाता है। तत्रं–मंत्र, आत्मपूजन, जादू–टोना आदि क्रिया कलाप ''भरारे'' को आमन्त्रित करके सम्पन्न कराये जाते हैं।

थारूओं का ईष्ट देवता भूमिया (भूमिसेन) की स्थापना वरगद या पीपल वृक्ष के नीचे की जाती है। भूमिया देवता पशुओं एवं फसलों का रक्षक देवता माना जाता है। प्रत्येक वर्ष गेहूँ की नई फसल तैयार होने पर सर्वप्रथम नये अनाज से रोट हलुआ–पूड़ीया बनाकर देवता के थान में जाकर चढ़ाई जाती हैं। थारूओं के आंगन में भी शिवलिंग की स्थापना की हुई रहती है। शिवरात्रि के दिन प्रत्येक थारू परिवार अपने घर पर स्थित शिवलिंग में जलाभिषेक करके पूजा करते हैं। घर के आंगन में पूर्व दिशा पर नगराई, कारेदेव, बुढ़े बाबा आदि की प्रतीकात्मक मिट्टी की चार छोटी–छोटी प्रतिमाएँ बनायी रहती हैं। भादों के महीने प्रत्येक वर्ष इन प्रतिमाओं की लिपाई–पुताई नदी से लाई गयी स्वच्छ मिट्टी से की जाती है। इन प्रतिमाओं को घर–परिवार का रक्षक देवता माना जाता है जो कि घर के अन्दर कुदृष्टि, भूत–पिशाच, जानवरों की रक्षा, बीमारी एवं अनिष्टकारी शक्तियों के कुप्रभाव से बचाते रहते हैं।[4] देवी दुर्गा को अन्न–धन्न की देवी माना जाता है। नवरात्रि पर्वो पर विशेष पूजा अर्चना में पंचरंगी मिठाई एवं पांच कन्याओं को देवी का स्वरूप मानकर भोजन कराया जाता है।

माघ या आषाढ़ माह में थारू समुदाय के लोग कालिका, शीतला, ज्वाला, पार्वती, दुर्गा एवं हुलाका आदि सात देवीयों की पूजा करते हैं। देवी के मन्दिर में भरारे को बिठाकर 'गणत' की जाती है। देवी को प्रसाद में नारियल व बतासे चढ़ाये जाते हैं। इन देवियों के दो सेवक जिन्हें खरगा एवं पछुआ के नाम से पुकारते हैं। खरगा एवं पछुआ के पूजन में मुर्गे एवं बकरी की बलि चढ़ाई जाती है। भरारे द्वारा मंत्रोच्चारण करके सातों देवीयो का नाम का हवन कराया जाता है। जो इस प्रकार है कि–

सूरज मूख अग्नि, पश्चिम मुख कारे,
देवी की चौकी, हनुमान का पहरा।
जिसकी भेट दें वही लेई ले।
और न लेई कोई
राजा राम की दुआई ———— ।[5]

उक्त मंत्र को विशेष पूजा–अर्चना के समय 'भरारे' द्वारा उच्चारित किया जाता है। मान्यता है कि उक्त मंत्र के उच्चारण मात्र से ही अनिष्टकारी शक्तियों का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

बोक्साओं की तरह थारूओं में भी तन्त्र–मन्त्र एवं जादू–टोना जैसी मान्यताऐं पायी जाती हैं। थारू स्त्रियां भी मोहिनी मंत्र एवं सम्मोहन मंत्र द्वारा किसी व्यक्ति को अपने वश में करने की क्षमता रखती हैं। शादी–विवाह, सन्तानोत्पत्ति, प्रेमी–प्रेमिकाओं की प्राप्ति, फसल एवं पशुओं की रक्षा आदि के लिए भी जादू टोना, तन्त्र–मन्त्र का सहारा लिया जाता है। थारू समाज प्रेत–आत्माओं एवं अदृश्य शक्तियों पर विश्वास रखते हैं। इन आत्माओं के पूजन के लिए बलि चढ़ाते हैं। आत्मपूजक समाज होने के कारण जब किसी व्यक्ति को बुखार, पिलिया, पेटदर्द, लकुवा, स्वप्न में बड़–बड़ाने की बीमारी होती है तो उसका उपचार डॉक्टर या अस्पताल न ले जाकर 'भरारे' क पास ले जाते हैं। उस पर अदृश्य शक्ति या आत्मा का प्रकोप मानकर तत्रं–मत्रं द्वारा ठीक करने की कोशिश करते हैं। इस कार्य को करने के लिए भरारे बीमार व्यक्ति को सामने बैठाकर अपनी नंगी पीठ पर संगलों से बना चाबुक मारकर प्रश्न पूछता है कि ''तू कौन सी आत्मा है जो अमुक व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करके बीमार किये हुए है, हम तुझे

मुर्गे या बकरे की बलि देकर प्रसन्न कर देंगे, लेकिन तू इस व्यक्ति से दूर चली जा''। ऐसा कहकर भरारे द्वारा काली व ईष्ट देवी के मंत्रोच्चारण करके बीमार व्यक्ति को ठीक कर दिया जाता है।[6] मान्यता है कि तब ये आत्माएं व्यक्ति को परेशान नहीं करती हैं। थारू समाज में जंगल के देवता ऐडीमल, भारामल, प्रेत शक्तियाँ खरगा– पछुवा को यदि बलि नहीं दी जाती है तो ये छल–बीमारी का प्रकोप फैला देते हैं। अतः वर्ष में एक बार 'थारूवाट' क्षेत्र के लोग इन अदृश्य आत्माओं को प्रसन्न रखने के लिए मुर्गे व बकरे की बलि चढ़ाते हैं। मान्यता है कि जिससे क्षेत्र या गांव में सुख–समृद्धि रहती है। रोग व्याधि का प्रकोप भी समाप्त हो जाता है।

निश्कर्श (Conclusion)– उत्तराखण्ड का थारू एवं बोक्सा जनजातीय समाज प्रारम्भ से ही तराई के जंगलों एवं नदी–नालों के निकट विषम परिस्थतियों में रहकर प्रकृति की रहस्यमयी शक्तियों के प्रति भयभीत होता रहता था। इन शक्तियों के प्रकोप से बचने के लिए उनमें आत्म–पूजन, तन्त्र–मन्त्र एवं पशु बलि के भाव जाग्रत हुऐ। जब कोई व्यक्ति बीमार हो जाता था तो उसे तान्त्रिक के द्वारा तन्त्र–मन्त्र एवं पशु बलि का सहारा लेकर रोगी को ठीक करने की अंधविश्वासी परम्परा निभायी जाती थी। लेकिन आज स्वास्थ्य सुविधाओं एवं शिक्षा की जागरूकता से इन अंधविश्वासी परम्पराओं से हटकर ये जनजातियाँ सरकारी एवं निजी चिकित्सालयों में डॉक्टर के पास जाकर अपना इलाज कराने लगे है। वे अपनी परम्परागत तन्त्र–मन्त्र चिकित्सा पद्धति को छोड़कर आधुनिक चिकित्सा प्रणाली को अपनाकर स्वस्थ एवं सुखी जीवन व्यतीत करने लगे हैं।

सन्दर्भ सूचीः–

1. बिष्ट वी0एस0– उत्तरांचलः पिछड़ी जाति एवं जनजाति परिदृश्य, अल्मोड़ा बुक डिपो प्रकाशन, वर्ष 1997, **पृष्ठ**–150।
2. वही, **पृष्ठ**–198।
3. बमराड़ा राजेन्द्र प्रसाद– बोक्सा जनजाति का समाजशास्त्रीय अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, वर्ष–2002, **पृष्ठ**–45 ।
4. बिष्ट वी0एस0– उत्तरांचलः पिछड़ी जाति एवं जनजाति परिदृश्य, अल्मोड़ा बुक डिपो प्रकाशन, वर्ष 1997, **पृष्ठ**–150।
5. भागीरथ सिंह राणा, (भरारे)–झनकट (खटीमा) निवासी से प्राप्त मन्त्र, वर्ष–2003।
6. डोभाल दीपक– उत्तराखण्ड हिमालयः समाज एवं संस्कृति, हर्षिता प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष–2015, पृष्ठ–113।